Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN: 2581-6241 Volume - 4, Issue - 7, July - 2021
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 3.871
Received on : 07/07/2021 Accepted on : 23/07/2021 Publication Date: 31/07/2021

असंगठित क्षेत्र में कार्यरत् महिलाओं की समस्या एवं भूमिका संघर्ष: एक प्रमुख समस्या (नैनीताल नगर के कुटीर एवं सेवा क्षेत्र में कार्यरत् महिलाओं की कार्यस्थल सम्बंधित समस्याओं एवं भूमिका संघर्ष का समाजशास्त्रीय अध्ययन)

डॉ. किशोर कुमार,

असिस्टेंट प्रोफ्रेसर, समाजशास्त्र विभाग, रा. स्ना. महाविद्यालय, बेरीनाग, पिथौरागढ़ , उत्तराखण्ड़.

Email - kishorkumar.282@gmail.com

शोध संक्षेप - भारतीय सामाजिक व्यवस्था में महिलाओं का महत्वपूर्ण स्थान है। वह पारिवारिक एवं कार्य निष्पादन-व्यवस्था का अभिन्न अंग है। महिलाएं पारिवारिक गृह सीमाओं से बाहर निकलकर व्यवसायिक क्षेत्रों में भी अपनी पहचान बना रही है। व्यवसाय सम्बन्धी कार्यो तथा परिवार के दायित्वों का निर्वहन करने में प्रायः उन्हें आन्तरिक संवेगात्मक अथवा भावात्मक द्वन्द् का सामना करना पड़ता है । यद्यपि असंगठित क्षेत्र एक व्यापक क्षेत्र हैं। अतः प्रस्तुत शोध प्रपत्र में नैनीताल नगर में असंगठित क्षेत्र के अंतर्गत कुटीर उद्योग क्षेत्र एवं सेवा क्षेत्र को अध्ययन की ईकाई मानकर, इन क्षेत्रों में कार्यरत कुल 248 महिलाओं को संगणना पद्वति के आधार चयनित कर महिलाओं में भूमिका संघर्ष सम्बंधित प्रमुख समस्या का समाजशास्त्रीय अध्ययन करने का प्रयास किया गया हैं।

1. प्रस्तावना :

आधुनिक समाज व्यवस्था में सामान्यतः लोगों को एक से अधिक भूमिकाओं को निभाना पड़ता है। लोग प्रायः वही कार्य करना चाहतें है जो उनसे अपेक्षा की जाती है। कभी-कभी लोगों को भूमिकाओं के निर्वहन में अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। जीवन में ऐसी परिस्थितियाँ भी आती है कि, जब दो या दो से अधिक भूमिकाओं को एक साथ निभाना इतना कठिन हो जाता है कि हम किसी भूमिका को ठीक से निभाने में असमर्थ हो जाते है, तब भूमिका संघर्ष की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। भूमिका संघर्ष आधुनिक युग में एक समस्या है क्योकि ओद्यौगिक समाज के अंतर्गत लोगों को प्रायः एक से अधिक भूमिकाओं का निर्वहन करना पड़ता है।1

18वीं एवं 19वीं सदी के सामाजिक परिवेश में औद्योगिकरण एवं नगरीकरण की प्रक्रिया ने भी महिलाओं की प्रस्थिति को परिवर्तित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। जिसके परिणामस्वरूप महिलाओं में आर्थिक आत्मनिर्भरता पनपी है। वे पुरूषों की आर्थिक दासता से मुक्त होकर घर की चहारदीवारी से निकलकर बाह्य जगत से परिचित हुई है। महिलाएं स्वंय विभिन्न उद्योगों एवं अन्य व्यवसाओं में कार्य करने लगी है। वर्तमान समय में महिलाएं सामाजिक-आर्थिक, राजनीतिक सभी क्षेत्रों में पुरूषों के समान कार्य करने लगी है।2

औद्योगिकरण की प्रक्रिया के फलस्वरूप समाज में श्रमिक वर्ग का जन्म हुआ। जिसमें संगठित एवं असंगठित श्रमिक वर्ग थे। संगठित श्रमिक वे श्रमिक हैं, जो अपने रहन-सहन का स्तर सुधारने हेतु राष्ट्रीय स्तर पर संगठित होकर प्रयास करते रहते हैं जबकि असंगठित श्रमिक, वे है जो अपनी आर्थिक दशा सुधारने हेतु संगठित होकर अपने न्योक्ताओं से अपने अधिकारो की बात नहीं कर पाते है। जिससे वह अपने अधिकारों से वंचित रह जाते है।

इस संदर्भ में कारखाना अधिनियम 1948 के अन्र्तगत असंगठित क्षेत्र में कार्यरत श्रमिक वे श्रमिक है जो के प्रमुख प्रावधानों जैसे स्वास्थ्य, सुरक्षा एवं कल्याण सम्बन्धी उपबन्ध आदि की परिधि से बाहर है। जबकि सामाजिक सुरक्षा अधिनियम 2008 के अनुसार, असंगठित क्षेत्र के श्रमिक वे श्रमिक है जो घरेलू कार्य, स्वरोजगार एंव वेतन पर कार्य कर रहे तथा जिनको अधिनियम की अनुसूची-।। में शामिल न किया गया हो। जबकि ''व्यक्तिगत या स्वरोजगार के स्वामित्व वाले व्यावसाय जो उत्पादन ,वस्तुओं की बिक्री या सेवाएं उपलब्ध कराने के कामों में संलग्न हैं और जहाँ श्रमिकों की संख्या दस से कम हो, असंगठित क्षेत्र कहलाता है''। इसके अतिरिक्त असंठित क्षेत्रों में "वह श्रमिक है जो गाँव अथवा शहरो में मजदूरी पर अस्थायी रुप से काम करते है चूँकि यह श्रमिक वर्ग मुख्यतया बिखरा हुआ होता है अतः इनका परस्पर संगठन नही हो पाता है"।3

असंगठित क्षेत्र एक व्यापक क्षेत्र है जिसमें महिलाओं का बड़ा भाग एक उद्यमी के रूप में कार्यरत् है। परन्तु रोजगार के स्तर एंव गुणवत्ता की दृष्टि से वह संगठित क्षेत्रों में कार्यरत् महिलाओं से पीछे रह जाती है। भारत की कुल श्रम शक्ति में काम करने वाले लोगों का 85 प्रतिशत से ज्यादा असंगठित क्षेत्र में कार्यरत् हैं। भारत के महापंजीयक एवं 2011 की जनगणना से प्राप्त आँकड़ों के अनुसार, भारत में महिला कार्मिको की कुल संख्या 14.98 करोड़ हैं और ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्रों में महिला श्रमिकों की संख्या क्रमशः 12.18 करोड तथा 2.8 करोड़ हैं। कुल 14.98 करोड़ महिला श्रमिकों में से 3.59 करोड़ महिलाएं खेतीहर मजदूर, जबकि 6.15 करोड़ कृषक तथा शेष महिला श्रमिको में से 85 लाख महिलाएं घरेलू उद्योगो और 4.37 करोड़ अन्य श्रमिक के रूप में वर्गीकृत है।4

2. अध्ययन क्षेत्र एंव निदर्शन पद्दति :

प्रस्तुत शोध पत्र की अध्ययन की ईकाई नैनीताल नगर के असंगठित क्षेत्र के कुटीर एवं सेवा क्षेत्रों में कार्यरत महिलायें हैं। नैनीताल नगर की 41.1 प्रतिशत महिलाएं मुख्य कर्मकार , सीमान्त एंव खेतिहर कर्मकार है , 24.0 प्रतिशत महिलाएं कृषक कर्मकार के रूप मे जबकि 5.7 प्रतिशत घरेलू उद्योगो एंव 29.2 प्रतिशत अन्य कार्यो में संलग्न हैं।5

प्रस्तुत शोध पत्र में नैनीताल नगर के असंगठित क्षेत्र के कुटीर एवं सेवा क्षेत्रों में कार्यरत् 248 महिला कार्मिका को संगणना पद्दति के आधार पर चयनित किया गया है। जिसमें कुटीर उद्योग क्षेत्र के मोमबत्ती निर्माण, सिलाई-बुनाई तथा साफ्ट टाँय (Soft Toy) निर्माण उद्योगों में कार्यरत् 168 तथा सेवा क्षेत्र के ब्यूटी पार्लर, होटल व्यवसाय तथा विभिन्न दुकानों में संलग्न 80 महिलाओं को सम्मिलित किया गया हैं। जिनका विवरण निम्न तालिका द्वारा स्पष्ट किया गया हैं ।

सारणी संख्या-1.01

असंगठित क्षेत्र					
कुटीर उद्योग क्षेत्र	**आवृत्ति**	**प्रतिशत**	**सेवा क्षेत्र**	**आवृत्ति**	**प्रतिशत**
मोम्बत्ती निर्माण उद्योग	50	29.76	ब्यूटी पार्लर	30	37.5
सिलाई बुनाई उद्योग	70	41.67	होटल व्यवसाय	08	10
साफ्ट टाँय उद्योग	48	28.57	विभिन्न दुकानों	42	52.5
योग	168	100	योग	80	100

भारतीय सामाजिक व्यवस्था में महिलाओं का महत्वपूर्ण स्थान है। वह पारिवारिक एवं कार्य निष्पादन-व्यवस्था का अभिन्न अंग है। महिलाएं पारिवारिक गृह सीमाओं से बाहर निकलकर व्यवसायिक क्षेत्रों में भी अपनी पहचान बना रही है। व्यवसाय सम्बन्धी कार्यो तथा परिवार के दायित्वों का निर्वहन करने में प्रायः उन्हें आन्तरिक संवेगात्मक अथवा भावात्मक द्वन्द्व का सामना करना पड़ता है। ड़िसूजा(1963)6 के अनुसार कार्यरत् महिलाएं अधिकांशतः परिवार तथा बच्चों की जिम्मेदारियों से उत्पन्न समस्याओं से सर्वाधिक प्रभावित होती है, विशेषरूप से उस अवस्था में जब बच्चें शैशवास्था में होते है। इन भूमिका संघर्षो के अतिक्ति महिलाओं को कार्यक्षेत्रों में भी अनेको समस्याओं का सामना करना पड़ता है। कार्य स्थल व घर के कार्यो में समायोजन करना, यह उनके लिए बड़ी समस्या होती है। जिसे वह किस तरह अपनी सुझ-बुझ से सुलझा पाती है। इस आधार पर अध्ययनकर्ता ने प्रस्तुत शोध पत्र में कार्यरत महिलाओं की प्रमुख आधारभूत समस्याओं का अध्ययन किया है।

दोहरे काम की समस्या:- असंगठित क्षेत्र में कार्यरत् कामकाजी महिलाओं को अपनी नौकरी से संबंधित कार्यो के अतिरिक्त भी परिवार के अधिकांश कार्यो को पूर्ण करना पड़ता है। इस प्रकार इन महिलाओं पर सदैव कार्य का दबाव बना रहता है। इसका उनके स्वास्थ्य और मानसिक सन्तुलन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

कम मजदूरी की समस्या:- असंगठित क्षेत्र में महिलाओं को केवल कुछ चुने हुए कार्यो में ही रोजगार के अवसर मिलते है। जैसेः- खेती, बागवानी, हस्तशिल्प, लघु उद्योग, चीनी मिट्टी तथा कार्यालयों से संबंधित कार्य। इन सीमित व्यवसायों में रोजगार की इच्छुक महिलाओं की संख्या अधिक होती है। असंगठित क्षेत्र में व्यवसायों की कमी व काम करने वालों की संख्या अधिकांश होने के कारण, महिलाओं को कम मजदूरी की समस्या का भी सामना करना पड़ता है।

दोयम स्थिति की समस्या:- असंगठित क्षेत्र में कार्यरत महिलाओं को दोहरे माप दण्ड की समस्या से भी रूबरू होना पड़ता है। कई नियोजक प्रसूति की स्थिति में छुट्टी तथा प्रसूति-हितलाभ, शिशु गृह की स्थापना की अनिवार्यता तथा महिलाओं को रात्रिकार्य और खतरनाक कामों पर कानूनी प्रतिबन्धों के कारण महिलाओं को नियोजित नहीं करना चाहते। इन कारणों के अतिरिक्त भारत पुरूष प्रधान समाज है। जिसकी झलक इस समस्या पर भी दिखाई देती है। असंगठित क्षेत्र में कार्य करने वाली महिलायें भी इस दोयम दर्जे की सामाजिक स्थिति का शिकार है। उन्हें समान कार्य व समान घण्टे कार्य करने के बाद भी महिलाओं को पुरूषों की तुलना में कम वेतन दिया जाता है।

कार्य की कठिन दशाओं की समस्या:- असंगठित क्षेत्र में कार्यरत महिलाओं को अपनी कार्य क्षमता के अनुपात से अधिक कठिन कार्यो का भी निर्वाह करना पड़ता है। विशेषकर शारीरिक कार्य वाले नियोजनों में लगातार कई घण्टों तक काम करना पड़ता है। कई कारखानों में उन्हें खतरनाक मशीनों या प्रक्रियाओं में भी नियोजित किया जाता है। कार्य स्थल पर उन्हें विश्राम के अभाव, अपर्याप्त प्रकाश और असुरक्षा, व्यावसयिक रोग, दुर्घटना आदि समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

कार्यक्षेत्र में महिलाओं को मिलने वाली सुविधाओं की कमी की समस्या:- असंगठित क्षेत्र में कार्य करने वाली महिलाओं के सामने वित्त की समस्या की समस्या तो है, नैनीताल में बहुत सी गैर सरकारी संगठन है। जिनके माध्यम से महिलाएँ काम कर रही हैं जिनमें कार्यरत महिलाओं को देने के लिए पर्याप्त धन नहीं होता है। जिससे उन्हें कम वेतन पर ही कार्य करना पड़ता है। जिससे इन असंगठित क्षेत्र में कार्यशील महिलाओं को सामाजिक-आर्थिक, राजनीतिक, एवं सांस्कृतिक समस्याओं का सामना भी करना पड़ता है।

बच्चों के पालन-पोषण की समस्या:- असंगठित क्षेत्र में कार्यशील महिलाओं के सामने बच्चों के पालन-पोषण की समस्या बहुत ही महत्वपूर्ण समस्या होती है। व्यावसायिक जीवन में आगे बढ़ने में महिलाओं के सामने तब बड़ी समस्या आती है। जब उन्हें अपनी कामकाजी भूमिका के साथ-साथ मातृत्व का दायित्व भी निभाना पड़ता है। महिलाएं अपने कार्य के साथ, पारिवारिक एवं सामाजिक दायित्वों का निर्वाह भी करती है। जिससे उन्हें भूमिका संघर्ष एवं तनाव जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

शिक्षा की समस्या:- असंगठित क्षेत्र में कार्यरत महिलाओं में शिक्षा का अभाव पाया जाता है। नैनीताल के संदर्भ में पुरूषों की तुलना में स्त्रियों के बीच शिक्षा का प्रसार अधिक है। परन्तु आज भी अधिकांश ग्रामीण महिलायें अशिक्षित है। जिस कारण आज भी महिलाऐं अपने अधिकारों से वंचित है। जागरूकता का अभाव कई समस्याओं को जन्म देता है उनमें से एक अशिक्षा भी है।

पारिवारिक दायित्वों के निर्वहन की समस्या:- इस क्षेत्र में कार्य करने वाली महिलाओं के पास समय का अभाव बहुत अधिक होता है। इस कारण वह पारिवारिक दायित्वों का निर्वाहन नहीं कर पाती है। कार्य से वापिसी के बाद, घर के सदस्य उन से यही अपेक्षा करते है कि चाय-नाश्ता व खाना उनके द्वारा ही मिले और वे परिवार के सदस्यों की इस अपेक्षा को वे खुशी-खुशी पूरा भी करना चाहती है और पति भी यह अपेक्षा रखते है कि उनके बच्चों की देखभाल स्वयं माँ के द्वारा ही हो। काफी प्रयास के बाद भी असंगठित क्षेत्र में कार्य करने वाली महिलाओं में 'समय का अभाव' एक प्रमुख समस्या है। जिन पारिवारिक दायित्वों का निर्वहन वे अपनी नैतिक जिम्मेदारी मानकर करना चाहती हैं किन्तु व्यावहारिक रूप से समय का अभाव इसमें बाधक है।

निर्णय लेने में स्वतंत्रता की समस्या:- यह एक बहुत बड़ी समस्या है इसे एक विडम्बना ही कहना चाहिए कि आज की महिलायें कार्यकारी होने के बावजूद अपने बारे में कोई निर्णय नहीं ले पाती है और उनका व्यावसाय करने का निर्णय परिवार के सदस्यों की ईच्छा पर निर्भर करता है।

स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ:- असंगठित क्षेत्र में कार्य करने वाली महिलायें आर्थिक रूप से संपन्न न होने के कारण कुपोषण की शिकार होती हैं साथ ही वे स्वास्थ्य संबंधी विभिन्न समस्याओं से घिरे रहती है। समुचित भोजन का अभाव, कुपोषण की दयनीय दशा, समुचित चिकित्सा के साधनों की कमी आदि के कारण निर्धन व्यक्तियों में अशाक्तता बीमारी, अकाल मृत्यु, विकलांगता आदि संबंधी समस्याएँ और भी जटिल और गम्भीर होती है।

स्वयं की रक्षा की समस्या:- आज के आधुनिक युग में महिलाएँ अधिकतर स्वयं की रक्षा करने में स्वयं को असमर्थ पाती है क्योंकि वे कामकाजी होने के कारण महिलाओं को अपने कार्य स्थल पर अकेले ही जाना पड़ता है, यदि अधिक दूरी पर कार्य के लिए जाना पड़े तो, रास्ते पर कभी उनसे अपराध होने का भय लगा रहता है, क्योंकि वर्तमान स्थिति में महिलाओं पर अधिक घटनाऐं हो रही है। कुछ कुलीन परिवार में महिलाओं को नौकरी या घर से बाहर जाने की आज्ञा नहीं मिलती है, जिसके कारण शिक्षा, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक व सांस्कृतिक, स्तर पर भी महिलाओं को आगे आने से काफी परेशानियों का सामना करना पड़ता है और उनके परिवारों में महिलाओं को अपमान की दृष्टि से देखा जाता है। इन समस्याओं के अतिरिक्त महिलाओं को घर एवं कार्यस्थल पर भूमिका संघर्ष एवं तनाव जैसी समस्याओं का सामना भी करना पड़ता है।7

भारत में सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया के चलतें महिलाओं में भूमिका संघर्ष एवं तनाव की समस्या एक महत्वपूर्ण पहलू हो गया है। पारंपरिक रूप से भारतीय महिलाएं पारिवारिक व्यवस्था के अंदर रहकर ही कार्य करती थी। वर्तमान में वे पुरूषों के कंधे से कंधा मिलाकर कई संगठनों में कार्यरत् हैं। परिणामस्वरूप आधुनिक महिलाएं दो प्रकार की व्यवस्थाओं में जीवनयापन करती हैं, तथा उन्हें

परिवार के साथ-साथ रोजगार से सम्बंद्ध भूमिकाएं भी निभानी पड़ती हैं। जिस कारण कामकाजी महिलाओं को भूमिका जनित तनाव का सामना करना पड़ता है। साथ ही साथ आर्थिक अनिवार्यताओं के चलते समाज में अधिकांश महिलाएं कई उद्योगों एवं प्रतिष्ठानों में कार्यरत् हैं। जिन महिलाओं को स्वयं के कार्य से संतोष मिलता है उन्हें अपनी उपलब्धि की कीमत भी मिलती हैं, परन्तु व्यावसाय के साथ-साथ उन्हें गृहस्थी पर भी विशेष ध्यान देना जरूरी होता हैं। अभी भी महिलाओं को अपनी पारंपरिक भूमिका में अलग से कोई सहायता नहीं मिलती है। यद्यपि महिलाओं के दायित्व बढ़ गये है, क्योकि सभी के लिए यह सम्भव नही होता कि वे जितना समय कार्यस्थल पर देती है, उतना उन्हें घरेलू कार्यों में भी दें। जिसके कारण ऐसी परिस्थितियों में महिलाओं को स्वयं के व्यवहार के साथ सामंजस्य बिठाना पड़ता है। जो महिलाओं के कार्मिक जीवन में तनाव उत्पन्न करती है। इन परिस्थितिओं से सामंजस्य न कर पाने के कारण कार्मिक महिलाओं में तनाव एवं भूमिका संघर्ष दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। इसी संदर्भ में नैनीताल नगर के असंगठित क्षेत्रों में कार्यरत् महिलाओं को घर एवं कार्यस्थल पर न्योक्ता एवं साथियों के व्यवहार आदि सम्बंधित समस्याओं का विश्लेषण निम्नतालिका द्वारा किया गया हैं।

सारणी संख्या -1.02

कार्यस्थल पर होने वाले तनाव के संदर्भ में उत्तरदात्रियों का प्रत्युत्तर

असंगठित क्षेत्र							
		कुटीर उद्योग क्षेत्र		सेवा क्षेत्र		योग	प्रतिशत
क्रम संख्या	प्रत्युत्तर का स्वरूप	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत		
1	साथियों के व्यवहार से	21	12.50	12	15.00	33	13.30
2	न्योक्ता के व्यवहार से	33	19.64	08	10.00	41	16.54
3	सैलरी समय पर न मिलने पर	75	44.64	24	30.00	99	39.92
4	अन्य	39	23.22	36	45.00	75	30.24
5	योग	168	100	80	100	248	100

उपरोक्त तालिका द्वारा स्पष्ट होता कि अंसगठित क्षेत्र में कार्यरत् अधिकांश 39.92 प्रतिशत महिलाओं का सैलरी समय पर न मिलने पर से तनाव महसूस होता है । जिस कारण उनको आर्थिक समस्याओ का सामना करना पड़ता हैं तथा 16.54 प्रतिशत महिलाओं को न्योक्ता के व्यवहार से तनाव महसूस होता है । जबकि 13.00 प्रतिशत महिलाओं को कार्यस्थल पर अपने साथियों के व्यवहार से तनाव महसूस होता हैं। किसी अन्य कारणो की समस्याओ से सम्बंधित 30.24 प्रतिशत महिलाओं को कार्यस्थल पर तनाव होता हैं। इन कारणों में महिलाओं की परिवार एंव प्रसूति से सम्बंधित सम्बंधित समस्याएं होती हैं। अतः उपरोक्त तालिका द्वारा स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र की अधिकांश महिलाएं ऐसी हैं जिनको केवल कार्यस्थल पर तनाव होता हैं।

समाज में व्यक्ति को दो भिन्न परिस्थितियों की भूमिका एक साथ निभानी पड़ती है यदि उनमें विरोधाभास हो तो उसे हम भूमिका संघर्ष कहते हैं। भूमिका संघर्ष के लिये समाज के सांस्कृतिक मूल्य भी उत्तरदायी हैं। आधुनिक एंव परिवर्तनशील समाजों में भूमिका संघर्ष अधिक पाया जाता है क्योंकि यहां नवीन एवं पुराने मूल्य साथ-साथ पाये जाते हैं । समाज में मनुष्य विभिन्न भूमिकाओं का निर्वाह करता है। एक व्यक्ति जिस प्रकार से एक परिस्थिति से सम्बंधित विशेषाधिकारों एवं सुविधाओं का उपभोग करता है, उसे ही भूमिका संघर्ष कहते हैं। लुण्डबर्ग, (1954:262)8 के अनुसार विभिन्न भूमिकाओं का एक साथ निभाना आसान नहीं होता है। अतः भूमिका संघर्ष की स्थिति में प्रभावी भूमिका का चयन कर एक या दो भूमिका छोड़ देते हैं। कामकाजी महिलाओं को अपनी नौकरी से सम्बद्ध कार्यो के अतिरिक्त घर के भी कामकाज देखने पड़ते हैं । इस प्रकार उन पर काम का बोझ भी अधिक होता हैं। साथ ही उन्हे कार्यस्थल पर भी दोहरी भूमिका एंव संघर्ष का भी सामना करना पड़ता है, जिसका उनके स्वास्थ्य और मानसिक संतुलन पर प्रतिकूल प्रभाव पडता हैं। महिलाओं को कार्यस्थल पर एक कार्मिक की भूमिका के साथ अन्य भूमिका भी निभानी पड़ती है जिससे महिलाओं में मानसिक तनाव एवं चिड़चिड़ापन देखने को मिलता है। इसी संदर्भ में अध्ययनकर्ता द्वारा निम्न भूमिकाओं के दोहन द्वारा उत्पन्न भूमिका संघर्ष को निम्नतालिका द्वारा विश्लेषित करने का प्रयास किया गया हैं।

Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN: 2581-6241 Volume - 4, Issue - 7, July - 2021
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 3.871
Received on : 07/07/2021 Accepted on : 23/07/2021 Publication Date: 31/07/2021

सारणी संख्या -1.03

विभिन्न भूमिकाओ द्वारा भूमिका संघर्ष होने के संदर्भ में उत्तरदात्रियों का प्रत्युत्तर

असंगठित क्षेत्र							
		कुटीर उद्योग क्षेत्र		सेवा क्षेत्र		योग	प्रतिशत
क्रम संख्या	प्रत्युत्तर का स्वरूप	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत		
1	माँ और कार्मिक की भूमिका में	105	62.50	16	20.00	90	36.29
2	पुत्री और कार्मिक की भूमिका में	22	13.09	23	28.75	51	20.56
3	विद्यार्थी और कार्मिक की भूमिका में	28	16.67	38	47.50	79	31.86
4	अन्य	13	7.74	03	3.75	28	11.29
5	योग	168	100	80	100	248	100

कार्यस्थल पर अधिकांश महिलाऐं भूमिका संघर्ष के कारण ग्रसित होती है। जिस कारण महिलाओं को भूमिका संघर्ष से उत्पन्न तनाव का सामना करना पड़ता है चूंकि दो असंगत भूमिकाओं का निर्वहन करने पर एक भूमिका को त्यागना पड़ता है। इसी संदर्भ में उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि 36.29 प्रतिशत महिलाओं को कार्यस्थल पर माँ एवं कार्मिक की भूमिका निभानी पड़ती है। जबकि 20.56 प्रतिशत महिलाओं को पुत्री एवं कार्मिक की भूमिका निभानी पड़ती है, तथा 31.86 प्रतिशत महिला कार्मिकों को विद्यार्थी एवं कार्मिक की भूमिका निभानी पड़ती है। कार्यस्थन पर 11.29 प्रतिशत महिलाएं एसी भी हैं जिनको अन्य भूमिकाओं के कारण भूमिका संघर्ष का सामना करना पड़ता है। जिससे स्पष्ट होता है कि महिलाओं को कार्यस्थल पर एक कार्मिक की भूमिका के साथ साथ अन्य भूमिका भी निभानी पड़ती है जिससे महिलाओं में मानसिक तनाव एवं चिड़चिड़ापन देखने को मिलता है।

असंगठित क्षेत्र में कामकाजी महिलाओं को अधिक समय तक कार्य करना पड़ता है। प्रायः महिलाएँ लगभग 8-9 घण्टे घरों से बाहर कार्य करती है। जिससे महिलाओं को घर और बाहर दोहरी भूमिका का निर्वाह करना पड़ता है। इस कारण कामकाजी महिलाऐं घर के सदस्यों की देख-रेख अच्छी तरह से नहीं कर पाती है। एक ओर जहाँ उन्हें घर के दैनिक कार्यो को तो सम्पन्न करना ही है। साथ में उन्हें कार्यस्थल पर लगभग 8-9 घण्टे कार्य करना पड़ता है। जिसकी वजह से वे अपने परिवार को अच्छे से समय नहीं दे पाती है। क्योंकि महिलाओं के कार्यकारी होने से उनके पास हमेशा समय की कमी रहती है। जिससे पति और अन्य सदस्यों को लगता है कि वह उनका पूर्ण ध्यान नहीं रख रही है। इसी संदर्भ में अध्ययनकर्ता द्वारा घर व कार्यस्थल में कार्य की अधिकता के कारण उत्तरदात्रियों के तनाव अनुभव करने का विश्लेषण निम्नतालिका द्वारा करने का प्रयास किया गया है।

सारणी संख्या -1.04

घर व कार्यस्थल में कार्य की अधिकता के कारण तनाव अनुभव करने के संदर्भ में उत्तरदात्रियों का प्रत्युत्तर

असंगठित क्षेत्र							
		कुटीर उद्योग क्षेत्र		सेवा क्षेत्र		योग	प्रतिशत
क्रम संख्या	प्रत्युत्तर का स्वरूप	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत		
1	हमेशा	55	32.74	24	30.00	79	31.85
2	कभीकभी-	68	40.48	35	43.75	103	41.53
3	बिल्कुल नही	45	26.78	21	26.25	66	26.62
4	योग	168	100	80	100	248	100

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि नैनीताल नगर के असंगठित क्षेत्रों में कार्यरत अधिकांश 73.38 प्रतिशत महिलाएं घर व कार्यस्थल में कार्य की अधिकता के कारण तनाव अनुभव करती है। जिसके परिणामस्वरूप कार्यस्थल व घर दोनों में मानसिक एवं शारीरिक दोनों समस्याओं का सामना करना पड़ता है। जबकि कार्यस्थल में 26.62 प्रतिशत महिलाएं ऐसी भी पायी गई जो घर व कार्यस्थल में कार्य की अधिकता के कारण भी तनाव अनुभव नही करती है।

नैनीताल नगर के असंगठित क्षेत्र में कार्यरत् महिलाओं के अध्ययन से प्राप्त आँकड़ों के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि असंगठित क्षेत्रों में कार्यरत महिलाओं की भूमिका संघर्ष एक प्रमुख समस्या है। कार्य स्थल व घर के कार्यो में समायोजन करना, यह उनके लिए बड़ी समस्या होती है। कार्यस्थल पर अधिकांश महिलाऐं भूमिका संघर्ष के कारण ग्रसित है। जिस कारण महिलाओं को भूमिका संघर्ष से उत्पन्न तनाव का सामना करना पड़ता है चूंकि दो असंगत भूमिकाओं का निर्वहन करने पर एक भूमिका को त्यागना पड़ता है। इसी संदर्भ में अधिकांश महिलाओं को कार्यस्थल पर माँ एवं कार्मिक की भूमिका निभानी पड़ती है। साथ ही महिलाओं को पुत्री, कार्मिक तथा विद्यार्थी की भी भूमिका निभानी पड़ती है। जिससे महिलाओं में मानसिक तनाव एवं चिड़चिड़ापन देखने को मिलता है। जिसके परिणामस्वरूप कार्यस्थल व घर दोनों में मानसिक एवं शारीरिक दोनों समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

अध्ययन के विश्लेषण द्वारा ज्ञात होता है कि कार्यरत् महिलाओं को दोहरी भूमिका का निर्वाहन करना पड़ता है। इसीजिए उन्हे संयुक्त परिवार की व्यवस्था को अपनाना चाहिए, जिससे उनके बच्चो की सही देखभाल हो सके। साथ ही सरकार एवं संगठनों द्वारा कार्यरत महिलाओं के लिए कार्यस्थल पर ही शैक्षिक, कार्य के अनुरूप आय, मनोरंजन तथा अन्य सम्बंधित योजनाओं एवं प्रावधानों को नियोजित किया जाना चाहिए ताकि महिलाओं में पायी जाने वाली भूमिका संघर्ष सम्बंधित जैसी समस्याओं को कम से कम किया जा सके।

सन्दर्भ सूची :

1. Goode,William J.(1960)., “Theory of Role Strain”, American Sociological Review. 25: 483-485.
2. Bhagwati J. & Srinivas.T.N, (1993)., “Indians Economic Reforms”, Ministry of Finance,Government of India Press, New Delhi.
3. भारत 2016., ‘‘सन्दर्भ ग्रन्थ’’, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, पृ.- 630-631.
4. *http://www.census*2011.*co.in/census/state/uttarakhand.html*
5. www.census2011.co.in/data/town/800331-nainital-uttarakhand-html.
6. De Souza,C.(1963), “The Call of Working Mother”, Social Action.p.640-646.
7. सिन्हा.पी.आर. ,इन्दुबाला, ‘‘श्रम एंव समाज कल्याण’’,भारती भवन (पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स), 2011, पृ.-470-475.
8. लुण्डबर्ग, जी.ए.(1954), “सोसियोलॉजी’’, हॉपर एण्ड ब्रादर्स पब्लिसर्स, न्यूयॉर्क।